16 दिसम्बर 2018 को मोहाली, पंजाब में ''नन्हीं छाँ पंजाब पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट'' की 10वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित सृजनहारी सम्मान नारी दा'' 2018 (Women Achiever Awards)'' कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण

————

1. **'नन्हीं छाँ पंजाब पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट'** की 10वीं वर्षगांठ पर आपके बीच आकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। यह संस्था एक दशक से कन्याओं, महिलाओं एवं पर्यावरण के लिए सराहनीय कार्य कर रही है, उसके लिए मैं इससे जुड़े सभी लोगों का हार्दिक अभिनंदन करती हूं।

2. **''सृजनहारी सम्मान नारी दा''** के बारे में जब मैंने पढ़ा तो मुझे गुरू नानक देव की कुछ पंक्तियां याद आईं। इस वर्ष हम लोग गुरू नानक जी का 550वां प्रकाश पर्व मना रहे हैं। उन्होंने नारी के विषय में कहा हैः–

''सो क्यों मंदा राखिए, जित् जिम्मे राजान्।''

(यानि उसे क्यों बुरा कहे जिन्होंने राजाओं को जन्म दिया। यानी नारी को हमेशा सम्मान की दृष्टि से देखा जाए। गुरू नानक ने मध्यकालीन भारत में स्त्रियों की कठिन परिस्थितियों को देख कर ऐसा कहा।)

3. यहां पर पंजाब के एक कवि शिव कुमार बटालवी की पंजाबी में लिखी कविता को उद्धृत करना चाहूंगीः–

''मां वर्गा घन छांवा बूटा, मैं नु किदरे नजर ना आवे
जिस तो ले के छांव उधारी, रब ने स्वर्ग बनाए।''

(मां के जैसा घना छांवदार वृक्ष मुझे कहीं नहीं दिखता और इसी की छाया को उधार लेकर शायद प्रभु ने स्वर्ग बनाया होगा!)

4. पंजाब नाम बेशक पांच नदियों से बना हो, पर यहां की धरती में, लोगों में, वे पांच गुण हैं जो मानवता को सच्चे अर्थों में परिभाषित करते हैं– परिश्रम, सच्चाई, वीरता, राष्ट्रप्रेम व आतिथ्य भाव।

5. **''नन्हीं छाँ''** द्वारा चलाए जा रहे दरी, फुलकारी, कढ़ाई व सिलाई से संबंधित प्रोजेक्ट महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के साथ–साथ यहां की परम्पराओं को भी आगे ले जाने का एक कदम है। इससे उनका आत्म–विश्वास भी बढ़ता है। इसके साथ–साथ इस संस्था ने पर्यावरण की रक्षा के लिए जो विभिन्न कार्यक्रम चलाए हैं, वे बहुत सराहनीय हैं। क्योंकि वास्तव में पर्यावरण की रक्षा मानव के अस्तित्व की रक्षा है।

6. हमारी सभ्यता और संस्कृति में हमेशा सिखाया गया है कि **''जननी जन्मभूमि च स्वर्गादपि गरीयसी''।** अर्थात् धरती माता का भी अपनी माता की तरह सम्मान करो। वृक्ष, हरे–भरे जंगल, पहाड़, झरने, नदियां, नाले सभी धरती की शोभा हैं। इन्हें प्राकृतिक रूप में संजोए–संवारे रखना हम सभी का कर्त्तव्य है। Green Earth, Clean Earth is our dream worth.

7. हमारे देश में पर्यावरण के महत्व को सदैव समझा गया है और पंजाब का तो नाम पांच नदियों से जुड़ा हुआ है। यहां के लोग प्रकृति प्रेमी हैं। आज से 550 साल पहले गुरू नानक देव जी ने कहा थाः–

''गगन में थाल, धूप महिआनलो

प्रवण चवरो करे, सगल बनराई फूलत ज्योति ''

(गगन आरती की थाली है, पवन आरती की सुगंध और समस्त वनस्पति आरती के फूल। यह हरी–भरी खूबसूरत दूनिया है।

8. एक समय ऐसा आया जब पंजाब में लिंगानुपात में काफी असंतुलन आ गया। ऐसी मुश्किल परिस्थिति में, हरसिमरत कौर जी ने **'नन्हीं छाँ'** के माध्यम से कन्या और पर्यावरण रक्षण का जो सुसंकल्प लिया, वह तारीफ के काबिल है।

9. मेरा मानना है कि पुरुष और स्त्री दोनों एक दूसरे के पूरक हैं तथा प्राचीन काल से ही हमारे देश में दोनों को समान शिक्षाएं दी जाती थीं। गार्गी, मैत्रेयी, अनुसुइया, मदालसा, भारती इत्यादि ऐसे नाम हैं जिनकी विद्वता पूरे संसार में प्रसिद्ध है। यह उन्हें दी गई समान शिक्षा का ही परिणाम है।

10. स्त्री को भी अपनी शक्ति का एहसास एवं अनुभव करना चाहिए। **श्रीमद्भगवद्गीता** में भगवान श्रीकृष्ण अपनी विभूतियों को गिनाते हुए कहते हैं–

"कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा।"

(''यानी, नारियों में मैं कीर्ति हूं, श्री हूं, वाक् हूं, स्मृति हूं, मेधा हूं, धृति हूं और क्षमा हूं।'') यह है स्त्री का महत्व। उनकी विशेषता का जितना वर्णन किया जाए, कम है।

11. महिलाओं के सशक्तिकरण में आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण सबसे अहम है। उनका वित्तीय समावेशन भी बहुत आवश्यक है।

12. आज जिन लोगों को पुरस्कृत किया जा रहा है उनके बारे में जानकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है और ये विश्वास भी बढ़ रहा है कि समाज में अब भी संवेदनशीलता, परमार्थ एवं परहित के भाव बरकरार हैं। मुझे खुशी है कि पुरस्कृत होने वालों में से कई लोगों ने बहुत कठिन परिस्थितियों से गुजरते हुए भी अपने को टूटने नहीं दिया। उन्होंने खुद को भी संभाला और दूसरों के लिए भी आगे बढ़कर काम किया।

13. मैं हमेशा यह बात कहती हूं कि नारी के अंदर असीमित क्षमताएं हैं। कुदरत ने उनको सृजनकार बनाया है और उनमें रचनात्मक प्रतिभा हैं। समाज चाहे तकनीकी रूप से कितना भी आगे बढ़ जाए, परंतु नारी की भूमिका सभी बदलावों के केन्द्र में हैं। **किसी ने कहा है और मैं उद्धृत करती हूं कि "If you want something said, ask a man; if you want something done, ask a woman."**

14. मानव केवल कहने को मानव नहीं है, उनमें मानवीय गुण भी विद्यमान हैं। मैं सबसे पहले रूपिन्दर कौर संधु का नाम गर्व से लेना चाहूंगी जिन्होंने लगभग 720 ऐसी लड़कियों को बचाया जो देह–व्यापार से जुड़ी थीं एवं उनके पुनर्वास का काम किया। वास्तव में, यह बहुत ही प्रेरणादायी कार्य है। पुरस्कार प्राप्त

करने वाले अन्य प्रतिभागियों के बारे में जानकर भी बहुत खुशी हुई है। अपने स्तर पर सभी ने बेहतरीन प्रयास किया है चाहे वे जाह्नवी–लावण्या का Pad Gang हो या नीलम सोंधी जी का आशीर्वाद, चाहे जालंधर की पहली महिला एम्बूलेंस ड्राइवर मंजीत कौर हो, जो निःशुल्क एंबूलेंस चलाती हैं या मंजू गुप्ता व सुलेखा रानी, जो तमाम परेशानियों के बावजूद गरीब एवं छोटी–छोटी बस्तियों में रहने वाले बच्चों के लिए निःशुल्क शिक्षा देने का काम कर रही हैं। वहीं दिव्या रावत एक ऐसी महिला हैं जिन्होंने मशरूम की खेती को बड़े पैमाने पर लोकप्रिय बनाने की दिशा में काम किया है और अब तक 10 हजार महिलाओं को शिक्षित किया है।

15. अंत में, मैं **'नन्हीं छाँ पंजाब पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट'** की 10वीं वर्षगांठ पर ट्रस्ट के संस्थापक सहित इनसे जुड़े सभी सदस्यों को कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए धन्यवाद देती हूं। मैं यहां उपस्थित सभी Women Achievers को दिल से बधाई देती हूं एवं आशा करती हूं कि भावी पीढ़ी को आप जैसी self-made, दृढ़–संकल्पित और जुझारू महिलाओं से प्रोत्साहन और प्रेरणा मिलेगी। इस श्लोक के साथ मैं अपनी बात समाप्त करती हूं:–

''परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः परोपकाराय वहन्ति नद्यः।
परोपकाराय दुहन्ति गावः परोपकारार्थ मिदं शरीरम्।।

(परोपकार के लिए वृक्ष फल देते हैं, परोपकार के लिए ही नदियां बहती हैं और परोपकार के लिए गाय दूध देती हैं। अर्थात् यह शरीर भी परोपकार के लिए बना है।)

————